प्रात: क्लास ओमशान्ति 28-9-67

रिकार्ड - तुम्हें पाके - ओमशान्ति। इस में बोलने का नहीं रहता।यह समझने की बात है।मीठे2 रूहानी बच्चे समझ रहे है कि हम फिर से सो पवित्र देवता बन रहे है।सम्पूर्ण निर्विकारी बन रहे है।बाप आकर कहते है बच्चे काम को जीतो।अर्थात पवित्र बनो।बच्चों ने गीत सुना।अब फिर से बच्चों को स्मृति आई है कि हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते है।जो कोई छीन न सके।वहाँ दूसरा कोई छीनने वाला होता ही नहीं है।इसको कहा जाता है अद्वैत राज्य।फिर बाद में रावण राज्य दूसरे का होता है।अभी तुम समझ रहे हो।समझाना भी ऐसे है हम फिर से वायसलेस भारत को बनाये रहे है। श्रीमत पर।ऊंच ते ऊंच भगवान तो सब कहेंगे।उनको ही बाप कहा जाता है।तो यह भी समझाना है। लिखना भी है भारत जो सम्पूर्ण निर्विकारी स्वर्ग था वह अभी विकारी नर्क बन गया है।फिर हम भारत को श्रीमत पर स्वर्ग बनाय रहे है। बाप जो बतलाते है वह नोट कर उस पर विचार सागर मंथन कर लिखने में मदद करनी चाहिए। ऐसा2 क्या लिखें जो मनुष्य समझें कि बरोबर भारत वायसलेस था। रावण राज्य था नहीं। बच्चों की बुद्धि में है अभी हम भारतवासियों को वायसलेस बनाये रहे है।पहले अपने को भी देखना है, हम निर्विकारी बने है। ईश्वर को मैं ठगता तो नहीं हूँ।ऐसे नहीं कि ईश्वर हमको देखता थोड़ेही है। तुम्हारे मुख से यह अक्षर निकल न सके।तुम जानते हो पवित्र बनाने वाला पतित-पावन एक ही बाप है।भारत वायसलेस था तो स्वर्ग था।यह(लक्ष्मी-नारायण)सम्पूर्ण निर्विकारी है ना।यथा राजा-रानी तथा प्रजा होंगी।तब तो सारे भारत को स्वर्ग कहा जाता है।अभी नर्क है।84 जन्म भारतवासियों लिए जो समझाई जाती है।यह सीढ़ी बहुत अच्छी चीज है।बाबा यह 20-25 बनाये देंगे।जो कोई अच्छा हो उनको सौगात भी दे सकते हो। बड़े आदमियों को बड़ी2 सौगात मिलती है ना।इन्द्रा गांधी बाहर जाती है तो उनको हीरों का हार,कंगन आदि मिलती है।विलायत में ज्वैलरी तो बहुत होती है।तो तुम भी जो आते है उन को समझाये कर ऐसे2 सौगात दे सकते हो।चीजें हमेशा तैयार रखी रहती है देने लिए। तुम्हारे पास भी नालेज तैयार रहनी है। इन में पूरा ज्ञान है।हम ने 84 जन्म कैसे लिये है।यह याद रहना चाहिए ।यह समझ की बात है ना, जरूर जो पहले2 आये है ,उन्होंने ही 84 जन्म लिये है।बाप 84 जन्म बताये फिर कहते हैं मैं इन के बहुत जन्मों के अन्त में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।फिर इनका नाम रखा देते है ब्रह्मा। इन द्वारा ब्राह्मणों की रचना रचता हूँ।नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से लाऊँ।ब्रह्मा का बाप कब सुना? जरूर भगवान ही कहेंगे।(विष्णु के नाभी से ब्रह्मा कहते हैं)इनका अर्थ समझ न सकेंगे।ब्रह्मा और विष्णु को दिखाते भी सूक्ष्म वतन में है। बाप तो कहते है मैं इनके 84 जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूँ। एडाप्ट किया जाता है तो नाम बदली किया जाता है।सन्यास भी कराया जाता है। सन्यासी जब सन्यास करते हैं तो पहरेन भूल नहीं जाते है।जो जीते है याद जरूर रहती है।तुमको भी याद रहेगी परन्तु तुमको उनके लिए वैराग्य है। क्योंकि तुम जानते हो यह सब कब्रदाखिल है।इसलिए हम उनको याद कर क्या करें।ज्ञान से सब कुछ समझाना है अच्छी रीत।वह भी ज्ञान से ही घरबार छोड़ते है। उनसे पूछा जाये घरबार कैसे छोड़ा तो बताते ही नहीं है। फिर उनको युक्ति से कहा जाता है आपको वैराग्य कैसे आया।हमको सुनाओ तो हम भी ऐसा करें।टेम्पटेशन तो चाहिए ना।तुम भी टेम्पटेशन देते हो कि पवित्र बनो।बाकि तुमको याद सब है।इस ब्रह्मा को भी सब याद है।छोटेपन से लेकर सब बताये सकते हैं। बुद्धि में सारा ज्ञान है। कैसे यह सब ड्रामा के एक्टरस है, जो पार्ट बजाते आये है।अभी कलयुगी कर्मबन्धन टूटने का है सभी का। फिर जावेंगे शान्तिधाम।वहाँ से फिर सब का नया बंधन जुटेगा। समझाने की पाइन्टस भी बाबा बहुत अच्छी रीत देते रहते है।यही भारतवासी आदी सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे।वायसलेस थे। फिर 84 जन्मों बाद विशश बने है।फिर वायसलेस बनना है।परन्तु पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए। अभी तुमको बाप ने बताया है।बाप कहते है तुम वही हो ना।

बच्चे भी कहते हैं बाबा आप वह ही हो। बाप कहते कल्प 2 भी पढ़ाये कर तुमको राजभाग दिया था। कल्प 2 ऐसे करते रहेंगे। ड्रामा में जो कुछ हुआ, विघ्न पड़ी, फिर भी पड़ेंगी। जीवन में क्या2 होता है याद तो रहता है ना। इनको तो सभी याद है। बतलाते हैं कैसे छोटेपन में गांव का छोरा था। छीनल टोपी (पुरानी टोपी) नंगे पांव, घूमते रहते थे। बाबा को सब याद है। कैसे बकरी का दूध पीता था। कहां रहता था अभी भी वह मकान आद दिखला भी सकता हूँ। परन्तु मकान आद तो सब मुसलमानों ने नये बनाये लिये होंगे। गांव रे का छोरा और फिर वैकुण्ठ का मालिक। वैकुण्ठ में गांवड़ा कैसे होगा। यह तुम बच्चे अभी समझते हो। इस समय तुम्हारे लिए यह पुरानी दुनिया गांवड़ा है ना। कहां वैकुण्ठ कहां यह नर्क। मनुष्य तो बड़े2 महल, बिल्डींग्स आद देखो समझते हैं यह ही स्वर्ग है। बाप तो कहते हैं यह सब मिटी पत्थर है। इनकी कोई वैल्यु नहीं। वैल्यु सबसे जास्ती हीरों की होती है। बाप कहते हैं विचार करो सतयुग में तुम्हारे सोने के महल कैसे थे। सोने की ईंटें थी। वहां सोना तो बहुत होता है ना। अभी तो पिछाड़ी है। खानियां खाली होती जाती हैं। वहां तो सब खानियां भरी रहती हैं। ढेर का ढेर सोना होता है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कोई समय मुझायश आती है तो बाबा ने समझाया है कोई2 ऐसे रिकार्ड हैं जो तुमको फौरन खुशी में ला देंगे। सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। समझते हो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। राजा का बच्चा समझेगा ना हम इस हद की राजाई का वारिस हैं। तुमको कितना नशा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप के वारिस हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। हम 21 जन्मों लिए वारिस बनते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। जिसका वारिस बनते हैं उनको भी जरूर याद करना है। याद करने बिगर तो वारिस बन न सकें। याद करके पवित्र बनें तब ही वारिस बन सकते हैं। तुम जानते श्रीमत पर हम विश्व का मालिक डबल सिरताज बनते हैं। जन्म ब जन्म हम राजाई करेंगे। मनुष्यों को भक्ति मार्ग में होता है विनाशी दान-पुण्य। तुम्हारा है अविनाशी ज्ञान धन। तुमको कितनी बड़ी लाटरी मिलती है। कर्मों अनुसार फल मिलता है ना। कोई बड़े राजा का बच्चा बनता है तो बड़ी हद की लाटरी कहेंगे। सिंगल ताज वाले सारे विश्व के मालिक तो बन न सकें। डबल ताज वाले विश्व के मालिक बनते हैं। इस समय दूसरी कोई राजाई है नहीं। फिर भक्ति मार्ग शुरू होता है तो दूसरे धर्म वाले आते हैं वह जब तक वृद्धि को पायें तो पहले वाले राजाएं विकारी बनने के कारण मतभेद में आये टुकड़े2 अलग कर देते हैं। पहले तो सारे विश्व पर एक ही राज्य चलता है। वहां ऐसे नहीं कहेंगे कि यह अगले जन्मों को कर्मों का फल है। अभी बाप तुम बच्चों को श्रेष्ठ कर्म सिखलाये रहे हैं। जैसा2 जो कर्म करेगा, सर्विस करेगा तो इसका रिटर्न में ऐसा मिलेगा। अच्छा कर्म ही करना है। कोई बुरा कर्म करते हैं तो इसके लिए श्रीमत लेते हैं। घड़ी2 पूछना चाहिए पत्र में। अभी प्राइम मिनिस्टर है, तुम समझते हो कितनी पीटिशन आती होगी। परन्तु वह कोई अकेले नहीं पढ़ते हैं। इनके आगे बहुत होते हैं। वह सारी पीटिशन देखते हैं। वह सारे पीटिशन देखते हैं। जो बिलकुल मुख्य होंगी, सब पास करेंगे तब प्राइम मिनिस्टर के टेबल पर रखेंगे। यहां भी ऐसे होता है। मुख्य2 पत्रों का तो फौरन रैसपान्ड दे देता हूँ। बाकि के लिए यादप्यार लिख देते हैं। एक एक को अलग पत्र बैठ लिखें यह तो हो न सके। बड़ा मुश्किल है। बच्चों को सिर्फ लाल अक्षर मिलती है तो कितने खुश होते हैं। वो हो आज बेहद का बाप की दादा द्वारा की चिट्ठी आई है। लिखते भी हैं शिव बाबा केयर आफ ब्रह्मा। रैसपान्ड भी शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा करते हैं। बच्चों को बड़ा खुशी होती है। सबसे जास्ती गद्गद होती हैं बान्धेलियां जो हो हम बन्धन में हैं। बेहद का बाप हमको कैसे चिट्ठी लिखते हैं। नयनों पर रखते हैं। अज्ञान काल में भी पति को परमात्मा समझने वाली को पति की चिट्ठी आती है तो उनको चुमन करेगी। तुम्हारे में भी कोई2 को बाप दादा का पत्र देख एकदम रोमांच खड़ी हो जाती है। प्रेम के आंसु आ जाते हैं। नमन करेंगे। आंखों पर रखेंगे। बहुत प्रेम से पत्र पढ़ते हैं। बान्धेलियां कोई कम है क्या। बाबा लिखते हैं जबरदस्तो

अगर करते है इस में तुम्हारा दोष नहीं है। अगर तुम्हारी आशा है, क्रिमिनल आई है तो फिर दोष है। लाचारी हालत में कोई दोष नहीं। राक्षसों के हाथ में आ जाते है तो फिर कर ही क्या सकेंगे। इस समय सभी क्चिक हैं ना। जो भी पतित है बड़े2 वह क्चिक है। है तो मनुष्य ना। फिर कोई सूपनखा, पूतनाएं भी होती है। यह नाम आसुरी है। विकार बिगर पतियों को छोड़ती नहीं। लड़ाई होती है ना। कहां माया भी जीत लेती है। कोई समझते है हमको तो पवित्र जरूर बनना है। भारत वायसलेस था ना। अब विशस है। अब जो वायसलेस बने होंगे वह ही फिर पुरुषार्थ करेंगे कल्प पहले वाले। तुम बच्चों को समझाना बहुत सहज है। तुम्हारा भी यह प्लैन है ना। गीता का युग चल रहा है। गीता का ही पुरुषोत्तम संगम युग गाया जाता है। तुम लिखो भी ऐसे गीता का पुरुषोत्तम संगम युग है। जब कि पुरानी दुनिया बदल नई होती है। तुम्हारी बुद्धि में है बेहद का बाप जो हमारा टीचर भी है उन से हम राजयोग सिख रहे हैं। अच्छी रीत पढ़ेंगे तो डबल सिरताज बनेंगे। कितना बड़ा स्कूल है। राजधानी स्थापन होती है। प्रजा भी जरूर अनेक प्रकार की होगी। राजाई बड़ी को प्राप्ती रहेगी। जैसा जो पुरुषार्थ करेंगे वह पहले आते रहेंगे। कम मान उठाने वाले पीछे आवेंगे। यह सब बना बनाया खेल है। हद के नाटक में भी नम्बरवार एक्टरस आते रहते है। पिछाड़ी में पार्ट पूरा होता है। फिर नई सिरे रीपिट होगा। यह भी ड्रामा का चक्र रिपिट होता है ना। अभी तुम बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप कहते है पवित्र बनो। अगर स्त्री पतित बननी चाहती हो तो गेट आउट। प्रवाह न करनी चाहिए। रोटी टुकड़ तो मिल सकता है। बच्चों को पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। भूल होती है तो अपने से प्रतिज्ञा करनी चाहिए ऐसा फिर कब नहीं करेंगे। अपने को थप्पड़ लगाना चाहिए। तो याद रहेगी। बाबा भक्ति मार्ग का भी मिसाल बताते हैं। प्रजा के टाइम बुद्धि योग बाहर जाता था तो अपना कान पकड़ते थे। चमाट लगाते थे। अब यह तो है ज्ञान। इसमें भी मुख्य याद की बात है। याद न रहे तो अपन को थप्पड़ मारना चाहिए। माया मेरे उपर जीत क्यों पाती है। क्या मैं इतना कच्चा हूँ। मुझे तो इन पर जीत पानी है। अपने आप को अच्छी रीत सम्भालना है। अपने से पूछो मैं इतना महावीर हूँ। औरों को भी महावीर बनाने पुरुषार्थ करता हूँ। जितना औरों को आप समान बनाऊंगा तो हमारा दर्जा ऊंच होगा। ऐसे करनी है। हम तो अपना राज-भाग जरूर लेंगे। अगर हमारे में भी क्रोध है तो दूसरे को कैसे कहेंगे कि क्रोध न करना है। सच्चाई नहीं हुई ना। लज्जा आनी चाहिए। दूसरे को समझाता हूँ अपना करता नहीं हूँ। वह ऊंच बन जायें हम नीचे ही रह जावें यह भी कोई पुरुषार्थ है। तब बाबा ने एक पंडित की कथा सुनाई थी। बाप को याद करते2 इस विषय सागर से क्षीर सागर में चले जाते हो। बाकि यह सब मिसाल बाप बैठ समझाते है।

जो फिर भक्ति मार्ग में रिपीट करते है। भ्रमरी का भी मिसाल यहां का है। तुम ब्राह्मणियां हो ना। ब्रह्मा-कुमार-कुमारियां सच्चे ब्राह्मण ठहरे। प्रजा पिता ब्रह्मा कहा है। जरूर यहां होगा ना। शंकराचार्य ने भी कहा ब्रह्मा भी उतर आये... ऐसे कहते है। तुम भारतवासियों को समझाते हो तो गृहस्थ आश्रम में है। सन्यासि तो सुख को ही नहीं मानते। वह तो कहते है सतयुग में भी था। कंस, जरासंधी आदि थे। बातों को ही खराब कर दिया है। अभी तुम बच्चों को सब बातें बुद्धि में है। तुमको बहुत होशियार होना चाहिए। प्लैन देखो ना। बाबा का भी प्लैन है ना। मनुष्य से देवता बनाने लिए। यह चित्र भी है समझाने लिए। इसमें लिखत भी ऐसी होनी चाहिए। गीता के भगवान का भी प्लैन है। वह तो बिलकुल सहज है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना लिखा हुआ है। यह शिव बाबा का प्लैन है ना। हम ब्राह्मण-ब्राह्मणियां है ना। ब्राह्मण हैं चोटी। एक की बात थोड़े ही होती। प्रजापिता ब्रह्मा, तो चोटी ब्राह्मणों की हुई ना। ब्रह्मा है तो जरूर ब्राह्मणों का इस समय बड़ा भारी कुटुम्ब होगा। जो फिर तुम दैवी कुटुम्ब में आते हो। इस समय तुमको बहुत खुशी है। क्योंकि लाटरी मिलती है। तुम्हारा नाम बहुत है। वन्दे मातरम्। शिव की शक्ति सेना तुम हो। वह तो सब है झूठे। बहुत होने कारण मनुष्य मूंझ पड़ते है। इसलिए राजधानी स्थापन

करने में मेहनत लगती है। बाप कहते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। इन में मेरा भी पार्ट है। मैं हूँ सर्वशक्तिवान। मेरे को याद करने से तुम पवित्र बन जाते हो। सबसे जास्ती चकमक है शिवबाबा। वह हो उंच ते उंच रहते हैं। मंदिर भी उनके ऊपर 2 में बनाते हैं। अभी तो गृहस्थियों के लिए शहर में भी बनाने लग पड़े हैं। नहीं तो हमेशा मंदिर पहाड़ी पर, जंगलों में ही होते हैं। दिन प्रति दिन बहुत अच्छा समझते रहते हो। औरों को भी समझाने लिए। कांटों को फूल बनाने में मेहनत तो लगती है ना। बाप कहते हैं यह खेल है। तुम कैसे 84 जन्म लेते हो यह किसको भी समझाना बहुत सहज है। पुरुषार्थ करते 2 कर्मातीत अवस्था को पाना है। रिजल्ट तो अन्त में हो निकलेगी। अभी सब पुरुषार्थी हैं। तुम बच्चों को यह नशा रहना है हम ईश्वरीय परिवार के हैं। बड़ों को भी तुम जानते हो। सबसे बड़े ते बड़े बाप को जानते हो। तुम बतलाते हो कृष्ण के चरित्र कुछ नहीं है। यह शास्त्र सभी है भक्ति मार्ग के। फिर यह प्रायः लोप हो जायेगा। बाबा ने एक चित्र दिखाया सर्प पर कृष्ण डांस करता था। मनुष्य चित्रों पर भी कितना चलते हैं। बाप समझाते हैं यह सब बनावटी की आसुरी चित्र है। सर्प कालीदह आदि वहाँ कहाँ से आई। फिर सब गोपियाँ दिखाते हैं। डांस कर रहे हैं। वह तो कालीदह में रहते हैं ना। फिर गोपियाँ कहाँ खड़ी रहे जो डांस करती थी। यह सब हैं रांग चित्र। दन्त कथाएं। यह सब सुनते 2 मनुष्यों का भाग्य ही खाली हो गया है। बाप कहते हैं तुमको कितना धनवान बनाया था। फिर रावण राज्य में तुम कितने खाली इनसालवेन्ट बन गये हो। तमोप्रधान बुद्धि हो गये हो। भारत में कितने अनेक अनेक धर्म हैं। यह अभी तुम समझाये सकते हो। समझाने के लिए भिन्न युक्तियाँ रच रहे हो। यह कितने झूठे चित्र हैं। वह भी तुम चाहो तो फेर कर के रख सकते हो। यह झूठ है, यह सच्च। भक्ति मार्ग में इन चित्रों पर भी कितना खर्चा करते हैं। ज्ञान है तो है पढ़ाई। जो बाप ही आये पढ़ाते हैं। और पवित्र बनाते हैं। शास्त्रों में कुछ एमआबजेक्ट है नहीं। करके पंडित बनेगा। उन्हों को टाइटल बहुत मिलता है। उन्हों का फाउन्डेशन जो है वहाँ घुसना चाहिए। हम तो कहेंगे यह सभी है ड्रामा। कोई का दोष नहीं। इन्हों का पार्ट ही ऐसा है। आगे झुकेंगे यह भी समझते हो। जो होशियार है वह आपने हम जिस का मान उंचा करेंगे। आज सतगुरुवार है। तुम्हारे ऊपर अभी अविनाशी बृहस्पति की दशा बैठती है। कमसई में दशाएं बैठती हैं ना। किस पर शुक्र की, किस पर राहु की, दशा बैठती है। जो गटर में गिर पड़ते हैं। फिर बहुत टाइम लग जाता है। अपने ऊपर राहु की दशा न लानी चाहिए। माया बड़ी जोर से थप्पड़ मार देती है। इसलिए सम्भाल करनी चाहिए। हराने से उस्ताद का भी नाम बदनाम होगा। तुम खुशी से कहेंगे हम ब्रह्माकुमारियों का यह पलैन है (लक्ष्मी-नारायण के चित्र तरफ इशारा) नर्क का विनाश होना है। भावी टाले नहीं टले। हिस्ट्री मस्ट रिपीट। समझाने का स्वभाव भी चाहिए ना। बाबा ने यह भी समझाया है सच्चे वैष्णव कौन हैं। विष्णुपुरी वायसलेस थी ना। वह ही सच्ची वेजिटेरियन कहे जाते हैं। यहाँ तो कोई पवित्र है नहीं। यह सब है हद के वेजिटेरियन। वह है बेहद के। देवताएं कब विकार में नहीं जाते। उनको हेविन इनको हेल कहा जाता है। ऐसे 2 बैठ समझावेंगे तो सब हियर 2 करेंगे। वैष्णव नाम कहाँ से निकाला। विकारों को छोड़ना है। उनको वायसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। बाकि इस वेजिटेरियन बनने से क्या होगा। क्या विश्व में शान्ति होगी। तुम तो चाहते हो विश्व में शान्ति हो। वेजिटेरियन तो बहुत होते हैं। तो वेजिटेरियन का अर्थ भी समझाना पड़े। वैष्णव है ही विष्णुपुरी। अभी तो है रावणपुरी। यह है विशश वर्ल्ड। वह है वायसलेस वर्ल्ड। हेल। कितनी अशान्ति है। नई दुनिया में शान्ति रहती है। बाप नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। (अच्छा मीठे 2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार बाद गुड मार्निंग। अच्छा बच्चों को नमस्ते। अच्छा बाबा दादा जी नमस्ते। अच्छा सभी आश्रमवासियों को यादप्यार स्वीकार करना जी। अच्छा अब विदाई।